हिन्दी भाषा के सेवापूर्व और सेवारत शिक्षकों की सूचना प्रौद्योगिकी के प्रति अभिवृति का अध्ययन

Dr. Ashok Kumar,
Assistant Professor,
Vivekananda College of Education,
Johlaka Sohna, Gurugram

शोध सार

ज्ञान विस्फोट के वैश्विक प्रतिस्पर्धा वाले इस युग में अद्यतन रहने के लिए आज के शिक्षक को सूचना एवं सम्प्रेषण प्रौद्योगिकी के साथ अपने को जोड़ना अनिवार्य होता जा रहा है। अतः प्रस्तुत शोध प्रपत्र में हिन्दी भाषा के सेवापूर्व और सेवारत शिक्षकों की सूचना प्रौद्योगिकी के प्रति अभिवृति का अध्ययन किया गया है। इस अध्ययन हेतु शून्य परिकल्पना सेवापूर्व और सेवारत हिन्दी भाषा शिक्षकों की सूचना प्रौद्योगिकी के प्रति अभिवृत्तियों में कोई सार्थक अंतर नहीं है, का निर्माण किया। प्रदत्त संकलन हेतु स्वयं निर्मित सूचना प्रौद्योगिकी अभिवृत्ति मापनी का प्रयोग किया । निष्कर्षतः पाया कि हिन्दी भाषा के सेवापूर्व और सेवारत शिक्षकों की सूचना प्रौद्योगिकी की अभिवृत्तियों में सार्थक सार्थक अंतर नहीं है।

मुख्य शब्दावलीः हिन्दी भाषा, सेवापूर्व, सेवारत शिक्षकों, सूचना प्रौद्योगिकी, अभिवृत्ति

प्रस्तावना

शिक्षण में प्रौद्योगिकी का अविर्भाव विज्ञान तथा प्रौद्योगिकी के बढ़ते हुए प्रभाव एवं अधिगम के सिद्धान्तों तथा व्यवस्था उपागम के अनुप्रयोग के फलस्वरूप हुआ है। इसके द्वारा शिक्षण उद्देश्यों की प्राप्ति एवं शिक्षण व्यवस्थाओं के इस सम्बन्ध में अपेक्षित प्रभाविता को ठोस आधार मिलता है। प्रौद्योगिकी से अभिप्राय उस व्यवस्था से है जो हमारे कार्य करने के तनीकों को कुशल एवं प्रभावी बना देती है, जिसके माध्यम से अभीष्ट लक्ष्यों की प्राप्ति सरल, सुगम एवं द्रुत बन जाती है तथा मानवीय प्रयास शुद्ध, परिष्कृत एवं मितव्ययी हो जाता है। शिक्षण की प्रौद्योगिकी का उद्भव व्यवस्था–उपागम (System's approach), सम्प्रेषण संकुल (Communications network), नए शिक्षा उपकरण जैसे – टेलीविजन, कम्प्यूटर, ऑडियो तथा विडियो एवं अभिक्रमित अनुदेशन की विधियों के प्रभावी उपयोग, सूचना प्रौद्योगिकी, सूचना एवं सम्प्रेषण प्रौद्योगिकी तथा e-learning से जुड़ा है। सूचना प्रौद्योगिकी ने समय, दूरी एवं सम्प्रेषण के जाल को एक नया आयाम प्रदान किया है जिससे इक्कीसवीं शताब्दी का शिक्षक बहुत तेजी से अपने को अनेकानेक अद्यतन संदर्भों से जोड़ सकता है। उसे दूरी का एहसास अब खलता नहीं तथा अपने विचारों को सम्प्रेषित करने में एक सहजता प्रदर्शित करता है। यह पक्ष शिक्षा की दृष्टि से अत्यन्त महत्त्वपूर्ण है और इसके समुचित उपयोग के तरीकों को और अधिक परिनिष्ठित रूप देने की आवश्यकता है।

भारतीय शिक्षा नीति 1986 में यह महसूस किया गया कि बिना ब्लैक बोर्ड के कक्षा में अध्ययन संभव नहीं हो सकता है। अतः दृश्योपकरण के रूप में कम से कम ब्लैक बोर्ड तो अवश्य हो। लेकिन समय के परिवर्तन के साथ ही शिक्षा को कम्प्यूटर आदि उपकरणों से जोड़ा गया तथा सभी स्कूलों में पाठ्य उपकरणों की व्यवस्था कराई गयी।

परन्तु यह भारतीय शिक्षा का दुर्भाग्य कहें कि उपकरणों के होने पर भी उनका उपयोग नहीं हो रहा। इसका प्रमुख कारण अध्यापकों की रूढ़िवादिता, आलस्य तथा उपकरणों के क्रियान्वयन में कुशलता का अभाव है अथवा वे शिक्षकवृन्द तकनीकी ज्ञान को अपनाना नहीं चाहते हैं। कुछ भी हो लेकिन इतना व्यय करने के बाद अभी भी वह प्रतिफल सम्मुख नहीं आया है जिसके माध्यम से सन्तोष का अनुभव किया जा सके।

समस्या कथन

"सेवापूर्व और सेवारत हिन्दी भाषा शिक्षकों की सूचना प्रौद्योगिकी के प्रति अभिवृत्तियों का अध्ययन"।

शोध के उद्देश्य

सेवापूर्व और सेवारत हिन्दी भाषा शिक्षकों की सूचना प्रौद्योगिकी के प्रति अभिवृत्तियों का अध्ययन करना।

शोध परिकल्पना

सेवापूर्व और सेवारत हिन्दी भाषा शिक्षकों की सूचना प्रौद्योगिकी के प्रति अभिवृत्तियों में कोई सार्थक अंतर नहीं है।

शोध विधि

प्रस्तुत अध्ययन में शोधकर्ता द्वारा **सर्वेक्षण विधि** का उपयोग किया गया है।

न्यादर्श

शोधकर्ता ने प्रस्तुत अध्ययन में प्रतिदर्श चयन के लिए सेवापूर्व शिक्षक हेतु **गुच्छ चयन विधि** का एवं सेवारत शिक्षकों के लिए **सुविधा चयन विधि** का प्रयोग किया है।

शोध उपकरण

प्रस्तुत शोध के उद्देश्यों के अनुसार लिकर्ट–निर्धारण मापनी पर आधरित **सूचना प्रौद्योगिकी अभिवृत्ति मापनी** को शोधकर्ता द्वारा स्वयं निर्मित किया गया।

विश्लेषण एवं व्याख्या

सेवापूर्व और सेवारत हिन्दी भाषा शिक्षकों की सूचना प्रौद्योगिकी के प्रति अभिवृत्तियों का तुलनात्मक अध्ययन

सेवापूर्व और सेवारत हिन्दी भाषा शिक्षकों का निर्धारण मापनी में निरूपित पाँच बिन्दुओं के आधार से अभिवृत्ति का संग्रह किया गया है जिसके आधार पर अंकों का संग्रह कर आवृत्ति एवं प्रतिशतों के आधार पर तुलनात्मक विवेचन प्रस्तुत किया जा रहा है। इस विवेचना को तालिका (1) में स्पष्ट रूप से प्रदर्शित किया गया है।

क्र.सं.	श्रेणियाँ	सेवापूर्व शिक्षक	सेवारत शिक्षक
1	पूर्णतः सहमत (SA)	34.44%	26.88%
2	सहमत (A)	22.66%	30.44%
3	अनिश्चित (U)	9.55%	11.77%
4	असहमत (D)	16%	16.66%
5	पूर्णतः असहमत (SD)	17.33%	14.22%

हिन्दी भाषा शिक्षकों का सूचना प्रौद्योगिकी की अभिवृत्ति के विषय में तुलानात्मक दृष्टि से विश्लेषण इस प्रकार है कि सेवापूर्व हिन्दी भाषा शिक्षकों ने 34.44% सूचना प्रौद्योगिकी के प्रति अभिवृत्ति में पूर्णतः सहमत दृष्टिकोण अपनाया है वहीं सेवारत हिन्दी भाषा शिक्षकों ने 26.88% पूर्णतः सहमति व्यक्त की है। सेवापूर्व हिन्दी भाषा शिक्षकों ने 22.66% सहमत हैं वहीं सेवारत हिन्दी भाषा शिक्षक 30.44% सहमति सूचना प्रौद्योगिकी के प्रति अभिवृत्ति है। सेवापूर्व हिन्दी भाषा शिक्षक जहाँ सूचना प्रौद्योगिकी में 9.55% अनिश्चितता प्रदर्शित कर रहे हैं वहीं सेवारत 11.77% अनिश्चितता व्यक्त कर रहे हैं। सेवापूर्व हिन्दी भाषा शिक्षक सूचना प्रौद्योगिकी के बारे में 16% असहमत हैं वहीं सेवारत 16.66% असहमति ध्वनित कर रहे हैं। सेवापूर्व भाषा शिक्षक सूचना प्रौद्योगिकी के बारे में 17.33% पूर्णतः असहमति अभिव्यक्त करते हैं वहीं सेवारत हिन्दी भाषा शिक्षक 14.27% पूर्णतः असहमति व्यक्त कर रहे हैं।

प्रस्तुत विश्लेषण के माध्यम से हिन्दी भाषा के सेवापूर्व और सेवारत भाषा शिक्षकों ने सूचना प्रौद्योगिकी के प्रति समेकित प्राप्तांकों के आधार पर प्रदर्शित अभिवृत्तियों में उपलब्ध मध्यमान के आधार पर तुलनात्मक अध्ययन किया गया जिसे तालिका (2) से स्पष्ट किया गया है।

हिन्दी भाषा शिक्षक	**मध्यमान M**	**कुल संख्या N**	**प्रमाणिक विचलन SD**	**D**	**σ_D**	**t मान**	**t तालिका मान**
सेवापूर्व	102.02	15	13.15	1.47	3.94	0.373	0.01—2.73
सेवारत	100.73	15	6.69				0.05—2.05

हिन्दी भाषा के सेवापूर्व और सेवारत दोनों वर्गों के शिक्षकों की संख्या 15 है तथा इनका प्रमाणिक विचलन क्रमशः 13.15 व 6.69 है। दोनों समूहों में मध्यमान में सार्थकता देखने के लिए t परीक्षण लगाया गया जिसका मान 0.373 आया है। आधार सामग्री के लिए स्वतन्तत्रा स्तर 28 है जिसका 0.05 व 0.01 पर t तालिका मान क्रमशः 2.05 व 2.73 है। इससे प्रमाणित होता है कि t मान की वैल्यू t तालिका मान से कम है। अतः दोनों समूहों में सार्थक अन्तर नहीं है।

उपर्युक्त विवेचन को आरेख प्रस्तुतीकरण के माध्यम से और अधिक स्पष्ट किया गया है।

आरेख (1) : सूचना प्रौद्योगिकी की अभिवृत्ति के प्रति हिन्दी भाषा के सेवापूर्व और सेवारत शिक्षकों का तुलनात्मक प्रदर्शन

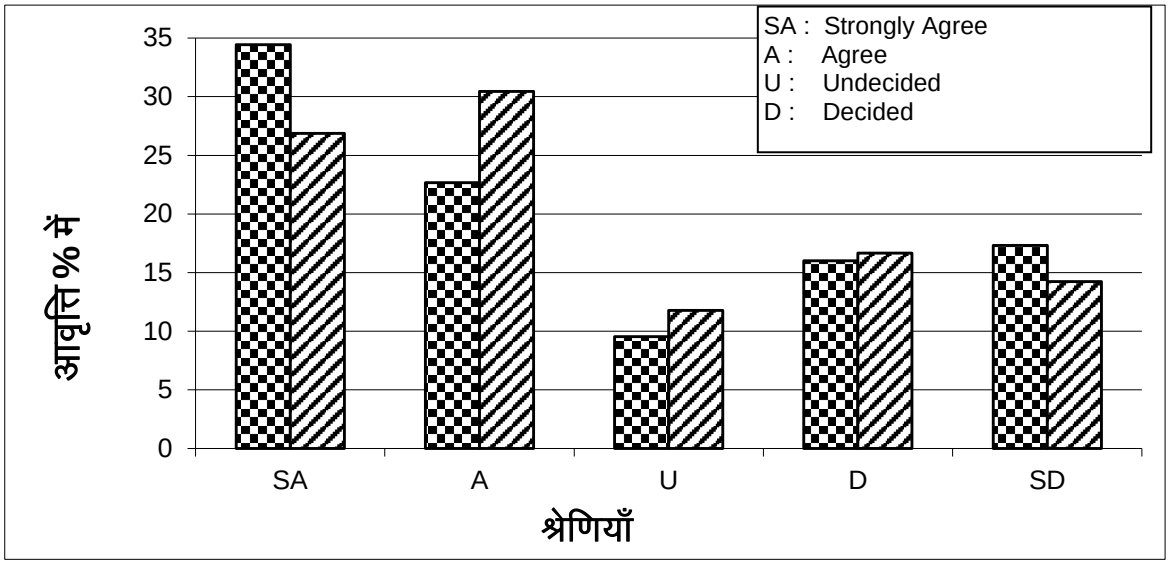

आरेख 1 के अवलोकन से ध्वनित होता है कि सेवापूर्व हिन्दी भाषा शिक्षक सेवारत हिन्दी भाषा शिक्षकों से पूर्णतः सहमत श्रेणी में सूचना प्रौद्योगिकी के प्रति अभिवृत्ति का प्रदर्शन करते हैं? लेकिन सहमत श्रेणी में अनिश्चित श्रेणी में व असहमत श्रेणी में सेवारत हिन्दी भाषा शिक्षक सेवापूर्व हिन्दी भाषा शिक्षकों से अधिक सूचना प्रौद्योगिकी के प्रति अभिवृत्ति प्रदर्शित करते हैं जबकि पूर्णतः असहमत श्रेणी में सेवापूर्व हिन्दी भाषा सेवारत हिन्दी भाषा शिक्षकों से अधिक सूचना प्रौद्योगिकी के प्रति अभिवृत्ति का प्रदर्शन करते हैं।

निष्कर्ष–

हिन्दी भाषा के सेवापूर्व और सेवारत शिक्षकों की सूचना प्रौद्योगिकी की अभिवृत्तियों में सार्थक अन्तर ज्ञापित करने के लिए t परीक्षण लगाया गया जिसका मान 0.373 आया। यह मान t मान विश्वास स्तर 28 के 0.05 व 0.01 विश्वास स्तरों के मानों से कम है। अतः इस अन्तर को महत्त्वपूर्ण नहीं माना जा सकता है। इसलिए सार्थक अन्तर न होने से यह परिकल्पना सार्थक सिद्ध होती है।

सन्दर्भ

- D. Zhang (2005): "Interactive Multimedia based Learning a Study of Effectiveness", American Journal of Distance Education 19 (3), pp. 149-162.
- Debi Meena Kumari, (1989): "Developing and Testing the Effectiveness of programmed Learning material in the Syllabus of principles of Education in the B.T. Course of Guahati University", Ph.D. Thesis, Guahati University.
- Joshi Anuradh and Mahapatra BC, (1995) : "Effectiveness of Computer Software in Terms of Higher Mental Ability in Science". Indian Journal of Psychometry and Education Vol. 26 (2) 105-108.
- Aggarwal Y.P. and Mohanty Manisha, (1998) : "A Meta Analytical Study at India Research", Indian Educational review Vol. 32(2) 57-66.
- Narayanasamy M and Thangasamys, (2001) : "Study of Computer uses Among Teacher Educators in teaching training Institution in Tamil Nadu", Indian Journal of Open Learning Vol. 10 (1) 60-67.
- मगंल, एस. के., (2009) शिक्षा मोविज्ञान, पी.एच.आई. लर्निंग। प्राइवेट लिमिटेड, नई दिल्ली

- पाठक, आर. पी. (2011). उच्च शिक्षा मनोविज्ञान, पियर्सन, दिल्ली ।
- राय, गीता (2011). अधिगमकर्ता का विकास तथा शिक्षण अधिगम प्रक्रिया, आर. लाल बुक डिपो, मेरठ ।
- गुप्ता, डा. एस. पी. आधुनिक मापन एवं मूल्यांकन, शारदा पुस्तक भवन, इलाहाबाद, 1998
- पाण्डेय, डा. के. पी. शैक्षिक अनुसन्धान, विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी, 2006